[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.............

Sr. No. of Question Paper : 4431 E

Unique Paper Code : 52051416

Name of the Paper : Hindi 'B'

Name of the Course : B.Com (Prog.)

Semester : IV

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी नाटक के विकास क्रम पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

कहानी के विकास क्रम का सामान्य परिचय दीजिए।

2. 'नमक का दरोगा' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'नन्हकू सिंह' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

3. 'ईमानदारी' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए ।

4. 'अंधेर नगरी' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

बिबिया का चरित्र चित्रण कीजिए ।

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए: (7)

(क) प्रसाद युगीन नाटक

(ख) शुक्लोत्तर निबंध

6. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए- (10×2=20)

(क) ''अरे बुद्धू ही रहे तुम ! नन्हकू सिंह जिस दिन किसी से लेकर जुआ खेलने लगे उसी दिन समझना वह मर गए। तुम जानते नहीं कि मैं जुआ खेलने कब जाता हूँ। जब मेरे पास एक पैसा नहीं रहता; उसी दिन नाल पर पहुँचते ही जिधर बड़ी ढेरी रहती है, उसी को बदता हूँ और फिर वहीं दाँव आता भी है। बाबा कीना राम का यह वरदान है।'

अथवा

मनुष्य के स्वभाव में ही यह बात है कि जब वह किसी बात पर प्रवृत्त होता है तो क्रमश: उसकी उन्नति करता जाता है और उस विषय को जब तक वह एक अन्त तक नहीं पहुँचा लेता सन्तुष्ट नहीं होता। सूर्य के मानने की ओर जब मनुष्यों की प्रवृत्ति हुई तो इस विषय को भी वे लोग ऐसी ही सूक्ष्म दृष्टि से देखते गए।

(ख) आत्मघात, मनुष्य की जीवन से पराजित होने की स्वीकृति है। बिबिया - जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करते। कौन कह सकता है कि उसने सब ओर से निराश होकर अपनी अन्तिम पराजय को भूलने के लिए ही आयोजन नहीं किया? संसार ने उसे निवार्सित कर दिया, इसे स्वीकार करके और गरजती हुई तरंगों के सामने आँचल फैलाकर क्या वह अभिमाननी स्थान की याचना कर सकती थी?

अथवा

बसिए ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि जो होय ।

रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय ।